International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 237-242

आधुनिक भारतीय समाज में बुनियादी शिक्षा की उपादेयता एवं निष्कर्ष

डॉ. अंजलि श्योकन्द*

प्रस्तावना

आज भारतीय समाज में मुख्य रूप से शिक्षित लोगों में शारीरिक श्रम के प्रति हीनता की भावना पैदा होने लगी है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक बड़ा दोष है। भारत जैसे देश जहां पर मानव श्रम बहुत बड़ी संख्या में उपलब्ध है वहां श्रम की अवहेलना करना देश की आर्थिक उन्नति में बाधक है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के क्षेत्र में इसी कमी को पहचाना और बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में श्रम की प्रतिष्ठा कर शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ने का प्रयास किया। गांधी जी के अनुसारी एक व्यक्ति को दान देने की बजाय यह कहीं वेहतर होगा कि हम उसकी आजीविका कमाने में उसकी सहायता करें और उसको श्रम करने के लिए प्रोत्साहित करें। श्रम या मेहनत ही सब विकासों का आधार है। आधुनिक भारतीय समाज में वेरोजगारी की समस्या एक महान समस्या है। इस समस्या का समाधान गांधी जी की आधारभूत या बेसिक शिक्षा के द्वारा किया जा सकता है जिसमें हस्त उद्योग द्वारा शिक्षण करने पर बल दिया गया है। हस्त उद्योगों के अंतर्गत गांधी जी ने कपास, रेशम की बुनाई से लेकर सफाई, पिंजाई, रंगाई, मांड लगाना, ताना लगाना, बुनाई, कसीदा काढ़ना, सिलाई आदि तमाम क्रियायें कागज बनाना, कागज काटना, जिल्द साजी, आलमारी फर्नीचर वगैरह तैयार करना, खिलौने बनाना, गुड़ बनाना इत्यादि उद्योगों को शामिल किया जिन्हें आसानी से सीखा जा सकता है और जिनको करने के लिए बड़ी पूंजी की भी जरूरत नहीं होती । गांधी जी ने बेरोजगारी मुख्य रूप से शिक्षित बेरोजगारी के विषय में चिंता व्यक्त करते हुए नई शिक्षा (बुनियादी शिक्षा) के द्वारा इस समस्या के हल करने की बात कही हैं। गांधी जी के शब्दों में मेरा यह विश्वास है कि हमारे कालेजों में जो इतनी भारी तथाकथित शिक्षा दी जाती है यह सब बिल्कुल व्यर्थ है और उसका परिणाम शिक्षित वर्गों की बेकारी के रूप में हमारे सामने आया है। आज युनिवर्सिटी में शिक्षा पाये हुए हमारे नौजवान या तो सरकारी नौकरियों के पीछे मारे–मारे फिरते है या उसमें असफल होकर लोगों को लूट–पाट के लिए भड़काकर अपनी कुढ़न मिटाते है। लोगों से भीख मांगने या उनके टुकड़ों के मोहताज बनने में भी वे शर्म महसूस नहीं करते। उनकी दुर्दशा की भी कोई हद है । आज युनिवर्सिटियों को चाहिए कि ये देश की आजादी के लिए जीने और मरने वाले जनता के सेवक तैयार करे । इसलिए मेरी राय है कि तालीमी संघ के शिक्षकों की मदद से यूनिवर्सिटी शिक्षा को नई तालीम (बुनियादी या बेसिक शिक्षा) के साथ जोड़कर उसकी लाइन में आना चाहिये । वर्तमान भारतीय समाज में मातृभाषा का महत्त्व घटता जा रहा है। आज भी अधिकांश शिक्षण संस्थाओं में बालक को प्रारम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती है । मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग घटता जा रहा है। हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों के बाद जन प्रतिनिधियों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह में मात्र तीन चार को छोड़कर बाकी सभी के द्वारा अंग्रेजी में शपथ ली गई। यह हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्मान एवं महत्त्व में निरन्तर आ रही कमी का प्रत्यक्ष प्रमाण है । विदेशी माध्यम ने हमारी देशी भाषाओं के विकास को रोक दिया है। विदेशी माध्यम के दुष्प्रभाव को बताते हुए गांधी जी ने कहा था कि विदेशी माध्यम से हमारे विद्यार्थी दिमागी थकावट के शिकार हुए है। उनके ज्ञानतन्तुओं पर अनुचित भार पड़ा है। वे रट्टू और

* सहायक आचार्य, शिक्षक–शिक्षा विभाग, टीका राम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सोनीपत, हरियाणा।

नकलची बन गये है। नैतिक कार्य और विचार के लिए वे अयोग्य हो गये है और अपनी विद्या को परिवार अथवा जनसाधारण तक पहुंचाने में असमर्थ हो गये है। विदेशी माध्यम ने हमारे चालकों को अपने ही देश में लगभग विदेशी बना डाला है। वर्तमान पद्धति का यह सबसे बड़ा दुःखद परिणाम है। गांधी जी ने विदेशी भाषा के माध्यम को एक अभिशाप बताया उनके अनुसार विदेशी भाषा के माध्यम ने जिसके जरिये भारत में उच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्र को हद से ज्यादा बौद्धिक और नैतिक हानि पहुँचाई है । आज आवश्यकता इस बात की है कि अंतराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी के साथ–साथ हमारी प्रान्तीय भाषाओं और राष्ट्रभाषा हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करके उनका विकास किया जाना चाहिए ताकि इन भाषाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो और हमारी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जाये। शिक्षा को जन साधारण तक पहुँचाने के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषाओं को बनाया जाना चाहिए । बुनियादी शिक्षा योजना के अंतर्गत मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा गया है । हमारे विभिन्न शिक्षा आयोगों ने भी गांधी जी के मत का समर्थन करते हुए शिक्षा का माथ्यम मातृभाषा को बनाये जाने का सुझाव रखा है। परन्तु आज भी निजी शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है जिससे मातृभाषाएँ और राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्थान गौण होता जा रहा है । मातृभाषा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने लिखा कि "मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियां क्यों न हो, मैं उससे उसी तरह चिपटा रहूंगा जैसी अपनी मां की छाती से । वही मुझे जीवन देने वाला दूध दे सकती है। मैं अंग्रेजी को उसकी जगह पर प्यार करता हूं लेकिन अगर वह उस जगह को हड़पना चाहती है, जिसकी यह अधिकारिणी नहीं है तो मैं उसका कड़ा विरोध करूंगा। यह बात मानी हुई है कि अंग्रेजी आज सारी दुनिया की भाषा बन गई है। इसलिए में उसे दूसरी भाषा के रूप में स्थान दूंगा लेकिन युनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम में स्कूलों में नहीं। वह कुछ लोगों के सीखने की चीज हो सकती हैं, लाखों करोड़ों की नहीं । " भारतीय समाज आज भी बाल विवाह, अनमेल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा आदि कुरीतियों का शिकार है यद्यपि न समस्त कुरीतियों को सरकार द्वारा गैरकाननी घोषित कर दिया गया है । निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के बुनियादी सिद्धान्त को लागू करके इन कुरीतियों से समाज को मुक्त किया जा सकता है और इन सामाजिक कुरीतियों के दुष्परिणामों से परिचित कराया जा सकता है । गांधी जी के शब्दों में " में भारत के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धान्त हो दृढ़तापूर्वक मानता हूँ । मैं यह भी मानता हूं कि इस लक्ष्य को पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है कि हम बच्चों को कोई उपयोगी उद्योग सिखायें और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शाक्तियों का विकास सिद्ध करें ।" इस प्रकार आज भारतीय समाज में बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता बहुत अधिक है । वर्तमान भारतीय समाज अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति पूर्ण रूप से करने में असमर्थ है। जनसंख्या के अनुपात में खाद्यसामग्री एवं अन्य वस्तुओं का उत्पादन नहीं हो रहा है। वस्तुओं के अभाव में अनेक प्रकार की विघटनकारी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिल रहा है जिसमें भारतीय समाज पतन की ओर अग्रसर है अतः आज बहुत ही जरूरी हो गया है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली को स्वावलम्बी बनाया जाये । बुनियादी शिक्षा का एक प्रमुख सिद्धान्त स्वावलम्बन या आत्मनिर्भरता पूर्ण शिक्षा है। गांधी जी के अनुसार " स्वावलम्बन मेरे लिए नई तालीम की पहली शर्त नहीं, बल्कि उसकी सच्ची कसौटी है । स्वावलम्बन के बिना नई तालीम वैसी ही मानी जायेगी जैसे बिना प्राण का शरीर ।" गांधी जी की राय में इस देश में लाखों आदमी भूखों मरते है, बुद्धिपूर्वक किया जाने वाला श्रम ही सच्ची प्राथमिक शिक्षा या प्रौढ़ शिक्षा है । अक्षर ज्ञान हाथ की शिक्षा के बाद आना चाहिए, हाथ से काम करने की क्षमता हस्तकौशल ही तो यह चीज है, जो मनुष्य को पशु से अलग करती है। स्पष्ट है कि शिक्षा को शिल्प अथवा उद्योग पर आधारित करके भूखमरी और निर्धनता जैसी सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। आज भारत के ग्रामवासियों का जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए उनको आत्मनिर्भर बनाया जाना जरूरी है इसके लिए उन्हें श्रम आधारित शिक्षा की जरूरत है जिसकी पूर्ति गांधी जी के बुनियादी शिक्षा योजना के द्वारा सम्भव है । आधुनिक भारतीय समाज की एक प्रमुख समस्या है जीवन आधारित शिक्षा का अभाव यद्यपि सैद्धांतिक रूप में यह स्वीकार किया गया है कि शिक्षा व्यावयसायोन्मुखी होनी चाहिए परन्तु व्यवहार में आज भी शिक्षा जीवन उपयोगी न होकर सैद्धांतिक विषयों पर आधारित है । फलतः शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति उसका उपयोग अपने वास्तविक जीवन में नहीं कर पाता है । जीवन के वास्तविक मूल्यों अहिंसा, सत्य,

प्रेम इत्यादि से वह वंचित रहता है। समाज में आदर्श नागरिकों के निर्माण के लिए इन मूल्यों पर आधारित बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती जा रही है । स्पष्ट है कि आधुनिक भारतीय समाज में गांधी जी का शिक्षा दर्शन और नई शिक्षा योजना (बुनियादी शिक्षा) की उपादेयता व प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है ।

गांधी जी के शैक्षिक दर्शन

गांधी जी की बुनियादी शिक्षा योजना शिक्षा का एक नया प्रत्यय था। यह शिक्षा प्रणाली जीवन केन्द्रित थी। यह जीवन की जीवन के द्वारा और जीवन के लिए शिक्षा है। यह व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में सहायक है। यह शिक्षा योजना आदर्श नागरिकों का निर्माण करती है। दूसरे शब्दों में यह नागरिकता के लिए शिक्षा है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा योजना नव सामाजिक व्यवस्था के निर्माण और सामाजिक परिवर्तन में उचित भूमिका निभा सकती है। यह शिक्षा प्रणाली मनोविज्ञान पर आधारित है जिसमें बालकेन्द्रित शिक्षा पर बल दिया गया है। गांधी जी की नई शिक्षा प्रणाली बंधुत्व भाव, सहयोगपूर्ण कार्य, सामूकि जीवन एवं सामाजिक गुणों का विकास करती है । यह सामाजिक समस्याओं का हैं समाधान करने में सक्षम है। यह शिक्षा नीति व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है जो आज के समय की मांग है । यह "कर्म ही पूजा है " की भावना का विकास करती है। यह कार्य अथवा शिल्प केन्द्रित शिक्षा है । उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षण विधियों में मुख्य रूप से करके सीखने एवं सह सम्बन्ध की विधियों ने भारतीय शिक्षा में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन को जन्म दिया। संक्षेप में गांधी जी के शैक्षिक दर्शन में विभिन्न दार्शनिक प्रवृत्तियों का समन्वय है जो शिक्षा की उस पद्धति को जन्म देती है जो आधुनिक समाज की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं की पूर्ति करती है ।

सीमाएं गांधी जी की वैत्तिक शिक्षा नीति की निम्न आधारों पर आलोचना की गई :

- उनकी आत्मनिर्भरता की नीति बालक के परिश्रम पर बल देती है। पृष्टभूमि में बालक की शिक्षा की उपेक्षा हो सकती है।
- यह कहा गया कि छोटे बालक महत्त्वपूर्ण तत्वों का उत्पादन नहीं कर सकते सामग्री का काफी नुकसान होता है (Wasted Material)
- स्कूल व्यावसायिक केन्द्र होने चाहिए।
- यह बच्चों के प्रति निर्भर दृष्टिकोण है।
- प्राथमिक शिक्षा अवधि में, नन्हें बच्चों को धन कमाने का आदर्श नहीं दिया जा सकता ।
- यह बालक के सहज विकास में बाधा हो सकती है।
- यह शिक्षा प्रणाली अब प्रचलन में नहीं है।
- सह–सम्बन्ध अप्राकृतिक व मजबूरी बन जाता है।

वास्तव में आलोचना के कई विचार मिथ्या बोथ पर आधारित है। मूलभूत शिक्षा का विचार कई व्यक्तियों द्वारा भली–भांति नहीं समझा गया। प्रो. सैयदायन के अनुसार यह एक खेदजनक बात है कि मूलभूत शिक्षा को सम्पूर्ण विशेषताओं को अधिकतर अध्यापकों के शैक्षिक प्रशासकों द्वारा न समझा गया। गांथी जी का शैक्षिक दर्शन आज भी वास्तविक व महत्त्वपूर्ण है। उनकी बुनियादी शिक्षा प्रणाली नवीन वास्तविक, कान्तिकारी और युग निर्माण करने वाली है। गांधी जी द्वारा स्थापित गुजरात पीठ, अहमदाबाद, हिन्दुस्तानी तालीम शिक्षा केन्द्र, सेवाग्राम आज भी उनके आदर्शों के मूर्तरूप और वहां ग्राम सुधार और आत्मोत्थान के लिए विभिन्न प्रकार की क्रियाओं का आयोजन होता है।

गांधी जी के विचारों व सिद्धान्तों की प्रासंगिकता के विषय में सुब्राता मुखर्जी ने लिखा है " महात्मा गांधी की प्रासंगिकता के विषय में प्रश्न उठाना यह प्रश्न पूछने के बराबर है कि ऊर्जा के लिए सूर्य की क्या प्रासंगिकता है ?" हमारे दूसरे सभी सिद्धान्त एक समय में प्रासांगिक व दूसरे समय में अप्रासंगिक हो सकते है।

लेकिन बुद्धिमता व मानवता के इस पुजारी की शिक्षाएं तो अनन्त समय के लिए है। उन्होंने हमें एक अमूल्य उपहार के रूप में आत्म सम्मान व पहचान के रूप में एक गौरवशाली राष्ट्र दिया । आधुनिक भारतीय समाज में गांधी जी के बुनियादी शिक्षा और शैक्षिक विचारों की उपयोगिता या आवश्यकता का अध्ययन करने से पहले भारतीय समाज के आधुनिक स्वरूप का अध्ययन करना आवश्यक है। समाज का शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है । यही कारण है कि समाज अपने नागरिकों की शिक्षा के लिए अच्छी से अच्छी व्यवस्था करता है जिससे शिक्षित होने पर वे सुयोग्य, सच्चरित्र तथा कर्मठ नागरिकों के रूप में समाज की आवश्यकताओं, आंकाक्षाओं तथा आदर्शों को पूरा करके उसे सबल, सुदृढ़ और शक्तिशाली बना सके । 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतन्त्रता के बाद देश में समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्रीय व्यवस्थ स्थापित की गई। देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उन्नति के लिए समय समय पर विभिन्न योजनायें बनायी गई और उन्हें क्रियान्वित किया गया। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में सुधार एवं विकास हेतु शिक्षा " में आयोगों की नियुक्ति की गई " ब्रिटिशकालीन शिक्षा में परिवर्तन किया गया । शिक्षा की भारतीय समाज की आवश्यकता के अनुरूप बनाने की सिफार विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा रखी गई । इन सबकें बावजूद भारतीय समाज अभी तक पिछड़ा हुआ है और आधुनिक भारतीय समाज का स्वरूप अब भी अन्य राष्ट्रों की तुलना में सन्तोषजनक नहीं है। वर्तमान भारतीय समाज अनेक समस्याओं से ग्रस्त है जिनका निदान काफी सीमा तक गांधी जी के शैक्षिक विचारों एवं बुनियादी शिक्षा को अपनाकर किया जा सकता है ।

किसी परम्परागत समाज में परिर्वतन लाने के लिए शिक्षा ही एक सशक्त साधन हो सकती है । इस बारे में शिक्षा आयोग (1965–1966) ने लिखा है "यदि बिना किसी हिंसात्मक क्रांति के बड़े पैमाने पर यह परिवर्तन करना है तो केवल एक हो साधन है जिसका प्रयोग किया जा सकता है और वह है शिक्षा । "

भारतीय समाज निर्धनता को महान समस्या से ग्रस्त है। निर्धनता के कारण लोगों के नैतिक मूल्यों में भी गिरावट आती जा रही है। गरीबी की इस समस्या के समाधान के लिए लोग अनैतिक कार्य करने से भी नहीं चूकते। निर्धनता का प्रमुख कारण हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली है जो नितान्त सैद्धांतिक है। जीवन की वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है । गांधी जी की बुनियादी या आधारभूत शिक्षा योजना के अन्तर्गत शिल्प आधरित शिक्षा की व्यवस्था पर जोर दिया गया। इस प्रकार शिक्षा को उत्पादकता से जोड़कर देश का आर्थिक विकास किया जा सकता है। गरीबी को दूर किया जा सकता है भारत एक धर्म प्रधान देश रहा है । परन्तु आज भारतीय समाज में सत्य, आहंसा, प्रेम जैसे नैतिक और आध्यात्मिक आदर्श समाप्त होते जा रहे है । लोगों का विश्वास इन प्राचीन मूल्यों पर से उठता जा रहा है। फलतः चारों और हिंसक प्रवृतियों को प्रोत्साहन मिल रहा है। अशांति, कलह, हिंसा के वातावरण ने देश और समाज की प्रगति को अवरूद्ध कर दिया है। आज गांधी जी के नैतिक सिद्धान्तों की नितांत आवश्यकता है । राष्ट्र और समाज एवं विश्व में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की स्थापना के लिए गांधी जी के विचारों और सिद्धान्तों की प्रासंगिकता व महत्त्व अत्यधिक बढ़ता जा रहा है। गांधी जी हमेशा ही निःशस्त्रीकरण को मानव के उत्थान का मुख्य आधार बताया था और इसी निःशस्त्रीकरण के लिए आज सारा राष्ट्र प्रयत्नशील है

निष्कर्ष

शिक्षा के क्षेत्र में गांधी जी का योगदान अनुपम है । वे सर्वप्रथम भारतीय थे जिन्होंने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के महत्वपूर्ण मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया। एक वास्तविक प्रणाली (An Original Scheme) डॉ. पटेल लिखते है कि गांधी का शैक्षिक दर्शन इस भाव से वास्तविक है कि उन्होंने इसे व्यक्तिगत अनुभव द्वारा प्राप्त किया । यह एक भाव से वास्तविक हो सकती है कि इस प्रकार की शिक्षा भूतकाल में किसी ने भी नहीं प्रदान की, परन्तु यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्तर पर इसका संरक्षण व अनुकूलन निःसन्देह वास्तविक एवं नवीन है। आचार्य विनोबाभावे के शब्दों में "यह कोई नई वस्तु नहीं है अपितु इसे नव प्रकाश में प्रस्तुत किया गया है" (It may not be new thing but it has been presented in a new light). गांधी जी ने किसी नए दर्शन को जन्म नहीं दिया । उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन को व्यावहारिक रूप दिया है। इसे व्यावहारिक रूप देने में उनकी अपनी मौलिकता है इसलिए आज उनके दर्शन को एक अलग दर्शन माना जाता

है। गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मानव का सम्पूर्ण विकास अर्थात उसके शरीर, मन और आत्मा का पूर्ण विकास करना है । विभिन्न शिक्षा आयोगों ने भी शिक्षा के इस उद्देश्य को मान्यता प्रदान की है। आधुनिक शिक्षा के अन्तर्गत सैद्धांतिक रूप से इन उद्देश्यों को मान्यता प्राप्त है लेकिन व्यावहारिक रूप से वर्तमान शिक्षा इन उद्देश्यों को पूरा नहीं करती। दुर्भाग्य से आज भी देश के असंख्य नवयुवक स्कूल तथा कॉलेजों में निरुउद्देश्य शिक्षा पा रहे है। उनका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है । वे यह नहीं जानते कि उनकी भावी जीवन की योजना क्या है और यह शिक्षा उन्हें उसके लिए तैयार भी कर रही है अथवा नहीं। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए गांधी जी ने ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जो हस्तकौशलों पर आधारित था । पाठ्यक्रमों में मातृभाषा को प्रमुख स्थान देकर उन्होंने मातृभाषा के महत्त्व को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया । उनके अनुसार यदि हमने मातृभाषा के महत्त्व को न समझा तो हम जन–शिक्षा की कल्पना को साकार नहीं कर सकते । वर्तमान में भी विभिन्न शिक्षा आयोगों द्वारा पाठ्यक्रम की विविधता और लचीलेपन पर जोर दिया गया है । पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को (कृषि शिक्षा एवं इन्जीनियरिंग शिक्षा) भी सम्मिलित करने के सुझाव दिये गये है । शिक्षा का माध्यम किसी क्षेत्रीय या प्रान्तीय भाषा को बनाने के सुझाव दिये गये है । गांधी जी ने शिक्षा विधि के क्षेत्र में करके सीखने पर सबसे अधिक बल दिया । विभिन्न शिक्षा आयोगों ने भी बालक की स्वतन्त्रता को स्वीकार लेकिन वर्तमान शिक्षा में बालक की रूचि, उसकी आवश्यकता को कोई भी महत्त्व नहीं दिया जा रहा। वर्तमान शिक्षा दिवियां व्याख्यान प्रधान है ।

गांधी जी ने अध्यापक और विद्यार्थी के सम्बन्धों को बहुत ही घनिष्ट और गहरा बनाने पर बल दिया है क्योंकि अध्यापक क व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रूप में बालक के मस्तिष्क पर पड़ती है । गांधी जी ने अध्यापकों के विषय में कहा है कि " अन्य व्यक्ति तो पदार्थो का रूप परिवर्तन करते है परन्तु अध्यापकों को बच्चों का रूप परिवर्तन करना होता है, उनका कार्य अन्य लोगों से कठिन होता है इस कार्य को सही ढंग से तभी किया जा सकता है जब अध्यापक पूर्ण निष्ठा से काम करें" परन्तु वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक तथा विद्यार्थी के मध्य ऐसा सम्बन्ध नहीं है जो शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक है । गांधी जी के धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से भारतीय शिक्षा आयोगों पर पाया गया है । गांधी जी ने सभी धर्मो के सामान्य सिद्धान्तों की शिक्षा पर बल दिया तथा नैतिक शिक्षा पर चल दिया । कोठारी कमीशन का विचार था कि धर्म और नीति को अपनाने का तात्पर्य यह है कि राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक मानलों में समान अधिकार प्रदान किया जाये, किसी धार्मिक सम्प्रदाय के साथ कोई पक्षपात न किया जाये तथा राज्य के विद्यालयों में किसी सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की शिक्षा न दी जाये। आयोग ने यह भी कहा कि धर्म निरपेक्षता का तात्पर्य यमहीनता या धर्म का विरोध नहीं है। वर्तमान शिक्षा में नैतिक शिक्षा और सर्व धर्म शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। गांधी जी के स्त्री शिक्षा और जन शिक्षा सम्बन्धी विचारों ने भी भारतीय शिक्षा आयोगों को प्रभावित किया है। इन आयोगों ने स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुए सुझाव प्रस्तुत किया "हमारे मानव साधनों का पूर्ण विकास, परिवार की उन्नति एवं शैशवावस्था के वर्षो में अत्यधिक सफलता से प्रभावित होने वाले बच्चों के चरित्र का निर्माण के लिए स्त्रियों की शिक्षा का महत्त्व पुरूषों की शिक्षा से भी अधिक है ।" अतः आयोगों की रिपोर्ट के आधार पर प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर स्त्री शिक्षा की व्यवस्था की गई है और तीनों स्तरों के अलग–अलग पाठ्यक्रम निर्धारित किये है। विशेष रूप से संगीत, गृहविज्ञान, कला तथा सामाजिक विषयों को महत्त्व प्रदान किया गया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अंग्रेजी पुस्तकें

1. फिशर, लुइस द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी, लन्दन 1952
2. गांधी, महात्मा द सलैक्टड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, वोल्यूम–4 सलेक्टड लैटर्स, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद 1968
3. मूर्ति, वी. रामनाः गांधी एसेंशियल राइटिंगस, गांधी पीस फाउण्डेशन, नई दिल्ली 1970

4. दत्त, डॉ. डी. के.: सोशल, मॉरल एण्ड रिलीजियस फिलोसॉफी ऑफ महात्मा गांधी, नई दिल्ली 1980
5. सक्सेना, डॉ. के. एस.: गांथी केन्टेनरी पेपर्स बोल्यूम 4 द पब्लिकेशनस डिवीजन कौंसिल ऑफ ओरियन्टल रिसर्च, भोपाल
6. पटेल, डॉ. एम. एस. अहमदाबाद 1956 द एजुकेशनल फिलोसॉफी ऑफ महात्मा गांधी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस,
7. मुखर्जी, सुजाता फैक्टर्स ऑफ महात्मा गांधी, दीप पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 1994
8. दयाल, बी द डेवलपमेन्ट ऑफ मॉडर्न इन्डियन एजुकेशन, 1953
9. गांधी, मो. क. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकत्या (हिन्दी अनुवादक – श्री काशीनाथ त्रिवेदी) नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद सितम्बर 1981
10. गांधी, मो. क. मेरे सपनों का भारत, भार्गव भूषण प्रेस वाराणसी
11. गांधी, महात्मा 'विद्यार्थियों से श्री गांधी ग्रंथागार, वाराणसी (बलिया)
12. गांधी, महात्मा सत्याग्रह, गांधी साहित्य प्रकाश, इलाहाबाद
13. गांधी, मो. क. गांधी जी की अपेक्षा (संग्राहक हरि प्रसाद व्यास) नवजीवन प्रकाशन मन्दिर,अहमदाबाद
14. रोला, रोमां महात्मा गांधी जीवन और दर्शन लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1976
15. रौलेण्ड, आर.: महात्मा गांधी, दिल्ली पब्लिकेशन डिवीजन, 1924 8. सीता रमैया, थी. पी. गांधी और गांधीवाद भाग–2, इलाहाबाद 1942
16. भट्टाचार्य, प्रभात गांधी दर्शन, नई दिल्ली 1969
17. घोष, डॉ. प्रफुलचन्द महात्मा गांधी, इलाहाबाद 1969
18. धावन, गोपीनाथ महात्मा गांधी और उनकी कहानी, मद्रास 1992
19. प्यारेलाल आधुनिक जगत में गांधी जी की कार्य पद्धतियां, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद
20. पाण्डे, बी. एन. महात्मा गांधी समग्र चिन्तन, गांधी जी दर्शन समिति, नई दिल्ली 1997
21. पाठक, पी.डी.: भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, द्वितीय संस्करण 1976
22. अभ्यंकर, ना. रा.: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेशनल बुक टूरिस्ट इन्डिया नई दिल्ली 1967
23. 1978 गुप्त, रामबाबू : भारतीया शिक्षा का इतिहास, सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, कानपुर, नवम संस्करण
24. सयदेन, पी. जी. भारतीय शैक्षणिक विचारधारा, मीनाक्षी प्रकाशन, 1975
25. बी. एल. ग्रोवर तथा यशपाल आधुनिक भारत का इतिहास एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., रामनगर नई दिल्ली नवम संस्करण 1995
26. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त
27. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षा शास्त्री
28. वालिया, डॉ. जे.एस. : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, अहम पाल पब्लिशर्स, जालन्धर (पंजाब)
29. साड़ी, मनजीत सिंह भारत का इतिहास (1857–1950) मॉडर्न पब्लिशर्स, जालंधर, द्वितीय संस्करण 2006

रिपोर्टर्स

30. रिपोर्ट ऑफ द राधाकृष्णन कमीशन ऑन यूनिवर्सिटी एजुकेशन (1949)
31. रिपोर्ट ऑफ द कोठारी एजुकेशन कमीशन (1966)
32. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, भारत सरकार (शिक्षा विभाग) मई 1986

❖◆❖